अद्वैत वेदांत का आधुनिक महत्व

(Modern Significance of Advaita Vedanta)

लेखक: *Anand Singh Dhami*

प्रस्तुतकर्ता: *Indian Philosophy & Ethics*

विषय क्षेत्र: *Advaita Vedanta, Non-duality, Adi Shankara, Modern Spirituality, Consciousness, Meditation, Hinduism, Philosophy, Mental Peace, Science and Spirituality, Self-Inquiry,*

संक्षिप्त परिचय:- *आज के तनावपूर्ण और तेज़ रफ़्तार जीवन में यह लेख **अद्वैत वेदांत** को एक प्रासंगिक दार्शनिक मार्गदर्शन के रूप में प्रस्तुत करता है। आत्मा और ब्रह्म के एकत्व की यह अवधारणा न केवल आध्यात्मिक स्पष्टता देती है, बल्कि आधुनिक मनुष्य को आंतरिक शांति, संतुलन और जीवन के गहरे अर्थ से जोड़ने का व्यावहारिक दृष्टिकोण भी प्रदान करती है।*

🔗 ऑनलाइन विस्तृत लेख: -

https://indianphilosophyethics.blogspot.com/2026/01/advaita-vedanta-modern-life-guide.html

© Anand Singh Dhami| Indian Philosophy & Ethics | Educational & Research Use

अद्वैत वेदांत का आधुनिक महत्व

1. प्रस्तावना: क्या आज के डिजिटल युग में प्रासंगिक है अद्वैत वेदांत?

आज का जीवन गति, शोर और निरंतर व्याकुलता से भरा हुआ है। हम सूचनाओं के सागर में तैर रहे हैं, पर अर्थ की खोज में भटक रहे हैं। सोशल मीडिया हमें जोड़ता है, पर अकेलापन बढ़ता है। सफलता के मानदंड ऊंचे होते जा रहे हैं, और उन्हें पाने की दौड़ में हमारा अपने आप से, अपने आसपास के लोगों से और प्रकृति से जुड़ाव टूट सा गया है। ऐसे में, क्या कोई ऐसा दर्शन है जो हमें इस भटकाव से निकालकर स्थिरता और स्पष्टता दे सकता है?

हमारे सामने है, **अद्वैत वेदांत** एक प्राचीन भारतीय दार्शनिक प्रणाली, जिसकी जड़ें उपनिषदों में हैं और जिसे आदि शंकराचार्य ने आठवीं शताब्दी में पुनर्जीवित किया। अद्वैत का सरल अर्थ है; "*द्वैत नहीं*", यानी अलगाव या द्वंद्व का अभाव। यह दर्शन सिखाता है कि इस सृष्टि में केवल एक ही चेतना, एक ही सत्य है, जिसे **ब्रह्म** कहते हैं। यही ब्रह्म हमारी अपनी वास्तविक प्रकृति, हमारी **आत्मा** है। हमारा पूरा संघर्ष इसी सत्य को भूल जाने और स्वयं को एक सीमित, अलग-थलग व्यक्ति समझने से शुरू होता है।

यह बात हज़ार साल पुरानी लग सकती है, लेकिन हैरानी की बात यह है कि आज का विज्ञान, मनोविज्ञान और हमारे व्यक्तिगत संकट सभी इसी मूल सिद्धांत की ओर इशारा कर रहे हैं। आज, जब दुनिया भर में लोग तनाव, चिंता और अर्थहीनता से जूझ रहे हैं, अद्वैत वेदांत एक **व्यावहारिक मार्गदर्शक** के रूप में फिर से प्रकाश में आ रहा है। यह न सिर्फ आध्यात्मिक सत्य बताता है, बल्कि हमें यह भी सिखाता है कि इस ज्ञान के साथ आज की चुनौतियों से कैसे जूझा जाए और एक संतुलित, सार्थक जीवन कैसे जिया जाए। चलिए, इस यात्रा पर निकलते हैं और देखते हैं कि कैसे यह प्राचीन ज्ञान हमारे आधुनिक प्रश्नों का उत्तर दे सकता है।

---

2. अद्वैत वेदांत का मूल सिद्धांत: यह क्या है और क्यों है विशेष?

2.1 अद्वैत वेदांत का संक्षिप्त परिचय क्या है?

अद्वैत वेदांत वेदों और उपनिषदों पर आधारित ज्ञान की परम्परा का सबसे प्रभावशाली स्कूल है। इसकी मुख्य धारणा अत्यंत सरल पर गहन है:

"**ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः**"

अर्थात, ब्रह्म (सर्वव्यापी चेतना) ही एकमात्र सत्य है; यह जगत (भौतिक संसार) माया या भ्रम है; और जीव (व्यक्तिगत आत्मा) वास्तव में ब्रह्म के अलावा और कुछ नहीं है।

इसे समझाने के लिए अक्सर यह उदाहरण दिया जाता है: जैसे सोने से बनी अलग-अलग अंगूठियाँ या हार दिखने में भिन्न हैं, लेकिन वास्तविकता में सब केवल **सोना** हैं। उसी प्रकार, यह सारा ब्रह्मांड और हम सभी, विविध रूपों में, **एक ही चैतन्य सत्ता** के अलग-अलग रूप हैं।

[ब्लॉग पोस्ट पढ़ें - अद्वैत वेदांत का आधुनिक महत्व]

2.1.1. एकत्व (Oneness)

समस्त अस्तित्व एक अविभाज्य, अखंड एकत्व है। जो भेद हमें दिखता है, वह हमारी पाँच इंद्रियों और मन की सीमित दृष्टि के कारण है।

2.1.2. ब्रह्म की प्रकृति

ब्रह्म निर्गुण (गुणों से परे), निराकार (रूपहीन), अनंत और सर्वव्यापी है। यह वह आधारभूत सच्चाई है जिस पर यह संपूर्ण विश्व टिका हुआ है।

2.1.3. माया का सिद्धांत

माया वह शक्ति है जो इस एकत्व में विविधता और भ्रम पैदा करती है। यह वास्तविक नहीं है, लेकिन वास्तविक जैसी प्रतीत होती है, जैसे रस्सी में साँप का भ्रम।

2.2 आदि शंकराचार्य ने अद्वैत दर्शन को कैसे पुनर्जीवित किया?

आठवीं शताब्दी में, जब भारत में बौद्ध दर्शन का प्रभाव बढ़ रहा था और वैदिक परंपरा कमजोर पड़ रही थी, तब एक अद्भुत बालक, **आदि शंकराचार्य** ने अद्वैत वेदांत की धारा को पुनः प्रवाहित किया।

केवल 32 वर्ष के संक्षिप्त जीवनकाल में उन्होंने पूरे भारतवर्ष का भ्रमण किया, शास्त्रार्थ किए और अद्वैत के सिद्धांतों को स्थापित किया। उन्होंने वेदांत सूत्रों (ब्रह्मसूत्र), उपनिषदों और भगवद्गीता पर गहन भाष्य (टीकाएँ) लिखीं, जो आज भी अद्वैत के आधार ग्रंथ माने जाते हैं।

2.2.1. चार मठों की स्थापना

देश के चार कोनों (**श्रृंगेरी, पुरी, द्वारका, बद्रीनाथ**) में चार मठों की स्थापना करके उन्होंने इस ज्ञान को संस्थागत रूप दिया और एक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सूत्र में पिरोया।

2.2.2. सारगर्भित शिक्षा

उन्होंने "**अहं ब्रह्मास्मि**" (मैं ही ब्रह्म हूँ) और "**तत्त्वमसि**" (तू वही है) जैसे महावाक्यों के माध्यम से जटिल दार्शनिक तत्वों को सरल और स्पष्ट किया।

2.2.3. विरोधों का समाधान

उन्होंने न केवल अन्य दर्शनों से बहस की, बल्कि हिंदू समाज के भीतर ही विभिन्न पंथों और मतों के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया।

2.3 आत्मा और ब्रह्म के संबंध को अद्वैत कैसे देखता है?

यह अद्वैत वेदांत का केंद्रीय और सबसे क्रांतिकारी सिद्धांत है। अधिकांश धार्मिक विचार 'जीव' (व्यक्तिगत आत्मा) और '**ब्रह्म**' (परमात्मा) के बीच एक स्थायी भेद मानते हैं , जैसे सेवक और स्वामी का संबंध।

किंतु अद्वैत कहता है कि यह भेद केवल **अविद्या** (अज्ञान) के कारण है। असलियत में, जीव और ब्रह्म पृथक नहीं हैं।

2.3.1. अभेद की स्थिति

हमारा वास्तविक स्वरूप, हमारी आत्मा, ब्रह्म के अलावा कुछ नहीं है। जैसे घड़ा, मटका, सुराही सभी मिट्टी के ही बने हैं और उनका नाम-रूप भिन्न होने पर भी उनकी मूल सत्ता '**मिट्टी**' ही है, वैसे ही सभी जीव ब्रह्म ही हैं।

2.3.2. अज्ञान का आवरण

हम स्वयं को शरीर, मन, बुद्धि, पेशे या भूमिकाओं से जोड़कर देखते हैं। यही पहचान हमारी असली पहचान शुद्ध चेतना, पर एक मोटा आवरण चढ़ा देती है।

2.3.3. ज्ञान से मुक्ति

इस अज्ञान के आवरण के हटते ही, व्यक्ति को अपने ब्रह्म-स्वरूप का साक्षात्कार हो जाता है। यही **मोक्ष** या मुक्ति है; भ्रम से मुक्ति।

---

3. मोक्ष और जीवन का लक्ष्य: आधुनिक संदर्भ में मुक्ति का क्या अर्थ है?

पारंपरिक रूप से मोक्ष का अर्थ जन्म-मरण के चक्र से सदा के लिए छुटकारा पाना माना जाता है। लेकिन आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से देखें, तो मोक्ष का अर्थ हो जाता है **मानसिक और भावनात्मक दासताओं से मुक्ति**।

हम सब किसी न किसी चीज़ के गुलाम हैं । कामयाबी की चाह के, दूसरों की राय के, अपने अतीत के दुखों के, भविष्य की चिंताओं के। अद्वैत के अनुसार, मोक्ष इन सभी बंधनों से वह मुक्ति है जो यह जान लेने से आती है कि "मैं वह शुद्ध चेतना हूँ जो इन सब उथल-पुथल का साक्षी मात्र है"।

3.1. फल की आसक्ति से मुक्ति

भगवद्गीता का "**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन**" का सिद्धांत यहीं से आता है। अद्वैत हमें अपना कर्म पूरी निष्ठा से करने को कहता है, लेकिन परिणाम से जुड़े बिना। यह आधुनिक प्रबंधन के '**फोकस ऑन प्रोसेस**' जैसा है।

3.2. अहंकार के बंधन से मुक्ति

जब हम जान लेते हैं कि हमारा वास्तविक 'मैं' यह छोटा सा अहंकार नहीं, बल्कि सबमें व्याप्त ब्रह्म है, तो अपमान, प्रशंसा, डर और लालच का असर कम हो जाता है।

3.3. व्यावहारिक मुक्ति

इसका मतलब दुनिया छोड़कर जंगल में जाना नहीं है। इसका मतलब है दुनिया में रहते हुए, अपनी जिम्मेदारियाँ निभाते हुए, भीतर से एक अटूट शांति और स्वतंत्रता का अनुभव करना।

---

4. तुलनात्मक दृष्टिकोण: अद्वैत वेदांत और आधुनिक विज्ञान के बीच क्या समानता है?

4.1 क्या अद्वैत वेदांत और क्वांटम भौतिकी में कोई साम्य है?

बीसवीं शताब्दी में क्वांटम भौतिकी के आगमन ने भौतिक जगत की हमारी समझ को मूलभूत रूप से बदल दिया। रोचक बात यह है कि इस नए विज्ञान के कई निष्कर्ष अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों से अद्भुत समानता रखते हैं।

4.1.1. अखंड एकत्व

क्वांटम एंटैंगलमेंट (उलझाव) बताता है कि दो कण, चाहे उनके बीच कितनी भी दूरी क्यों न हो, एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। वैज्ञानिक डेविड बोहम ने इसे "**अखंड क्रम**" कहा। यह अद्वैत के 'सर्वव्यापी एकत्व' का वैज्ञानिक प्रतिध्वनि है।

4.1.2. प्रेक्षक और प्रेक्षित का अभेद

क्वांटम सिद्धांत में, प्रेक्षक (Observer) का प्रयोग से परिणाम पर सीधा असर पड़ता है। यह सुझाव देता है कि चेतना और पदार्थ अलग-अलग नहीं हैं। अद्वैत भी कहता है कि जगत चेतना का ही विस्तार है और उससे पृथक नहीं।

4.1.3. सापेक्षवाद और माया

आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत ने समय और स्थान को निरपेक्ष नहीं, बल्कि प्रेक्षक के सापेक्ष दिखाया। यह अद्वैत की '**माया**' यानी सापेक्षिक अनुभव की दुनिया की अवधारणा से मेल खाता है।

4.2 चेतना के प्रश्न पर विज्ञान और अद्वैत की क्या राय है?

चेतना (Consciousness) आज के विज्ञान की सबसे बड़ी पहेली है। न्यूरोसाइंस मस्तिष्क की कोशिकाओं और रासायनिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है, लेकिन यह नहीं बता पाता कि इन भौतिक प्रक्रियाओं से '**अनुभव**' कैसे पैदा होता है। अद्वैत इस प्रश्न का एक मौलिक उत्तर देता है।

4.2.1. चेतना मूलभूत है

विज्ञान मानता है कि चेतना भौतिक मस्तिष्क की एक उपज है। अद्वैत इसे उलट देता है। यह कहता है कि **चेतना ही मूलभूत सत्य है** और यही पदार्थ के रूप में प्रकट होती है।

4.2.2. विज्ञान की सीमा

वैज्ञानिक अध्ययन का उपकरण स्वयं मन और इंद्रियाँ हैं। जैसे आँख स्वयं को नहीं देख सकती, वैसे ही मन, चेतना का अध्ययन नहीं कर सकता। अद्वैत इसके लिए '***आत्म-अनुसंधान***' और '***ध्यान***' जैसी आंतरिक विधियों का सुझाव देता है।

4.2.3. वैज्ञानिकों की रुचि

आश्चर्य नहीं कि क्वांटम भौतिकी के जनकों में से एक, ***श्रोडिंगर***, और ***आइंस्टीन*** जैसे वैज्ञानिक वेदांत दर्शन से प्रभावित थे। उन्होंने महसूस किया कि ब्रह्मांड की एकता और रहस्य को समझने के लिए विज्ञान के बाहर भी देखना होगा।

अद्वैत वेदांत बनाम अन्य दर्शन

विशेषता	**अद्वैत वेदांत**	**द्वैत वेदांत**	**बौद्ध दर्शन (शून्यवाद)**
तत्व मूल	एक ही सत्य: ब्रह्म	दो सत्य: जीव और ब्रह्म अलग	शून्यता; कोई स्थायी सत्ता नहीं
आत्मा की स्थिति	आत्मा ब्रह्म के समान है	आत्मा ब्रह्म से सदैव भिन्न	अनात्मवाद; कोई स्थायी आत्मा नहीं
मोक्ष का अर्थ	अज्ञान का नाश, एकत्व का ज्ञान	भगवान के धाम में स्थायी निवास	निर्वाण, सभी बंधनों से मुक्ति
मुख्य आचार्य	आदि शंकराचार्य	मध्वाचार्य	नागार्जुन

उदाहरण	सोने से बने विभिन्न आभूषण	सूर्य और उसकी किरणें	बादलों का आकाश में उठना और बिखरना

5. अद्वैत वेदांत का सामाजिक प्रभाव: क्या यह समाज को बदल सकता है?

5.1 क्या अद्वैत सामाजिक समरसता और सहिष्णुता को बढ़ावा देता है?

यदि हर व्यक्ति की अंतरात्मा एक ही ब्रह्म है, तो फिर ऊँच-नीच, जाति-पाँति, धर्म-संप्रदाय के भेद कैसे सच हो सकते हैं? अद्वैत वेदांत का सामाजिक संदेश **गहन समानता और सार्वभौमिक भाईचारे** का है।

शंकराचार्य ने स्वयं इस सिद्धांत को प्रचारित किया कि ज्ञान प्राप्ति का अधिकार जन्म के आधार पर नहीं, बल्कि योग्यता और जिज्ञासा के आधार पर है।

5.1.1. भेदभाव का मूल कारण

अद्वैत के अनुसार, सभी प्रकार के भेदभाव और संघर्ष की जड़ हमारा 'अहंकार' और '**द्वैत भाव**' है। यह सोच कि '**मैं तुमसे अलग हूँ**'। इस भाव के मिटते ही, दूसरे के दुख को अपना दुख समझने की स्वाभाविक प्रवृत्ति जागृत होती है।

5.1.2. पर्यावरण चेतना

यदि सब कुछ एक ही सत्ता का विस्तार है, तो प्रकृति, पशु-पक्षी हमसे अलग नहीं हैं। यह दृष्टि पर्यावरण संरक्षण को एक आध्यात्मिक कर्तव्य बना देती है।

5.1.3. वैश्विक शांति

आतंकवाद, युद्ध और राष्ट्रवादी उन्माद अक्सर 'हम बनाम वे' की भावना से पैदा होते हैं। अद्वैत की एकत्व की दृष्टि इन दीवारों को ढहाने में मदद कर सकती है।

5.2 भौतिकवाद और उपभोक्तावाद के विरुद्ध कैसे है अद्वैत का संदेश?

आज का विज्ञापनों से पटा हुआ संसार हमें लगातार यह संदेश देता है: "**तुम्हारे पास कम है। और खरीदो, और पाओ, तभी खुश रहोगे।**" यह एक अनंत दौड़ है जो हमें थका देती है और कभी संतुष्ट नहीं होने देती। अद्वैत वेदांत इस भ्रम को तोड़ता है।

5.2.1. खुशी का स्रोत

अद्वैत कहता है कि सच्ची खुशी और शांति बाहर नहीं, **भीतर** है। वह हमारी स्वाभाविक अवस्था है, जिसे हमने भौतिक वस्तुओं के पीछे भागकर ढक दिया है।

5.2.2. सादगी और संतोष

जब हमें यह ज्ञान हो जाता है कि हमारा वास्तविक स्वरूप पूर्ण और अभावरहित है, तो बाहरी चीजों को इकट्ठा करने की होड़ अपने आप शांत होने लगती है। इससे एक सादा, संतुष्ट और टिकाऊ जीवनशैली को अपनाने में मदद मिलती है।

5.2.3. अर्थपूर्ण जीवन

इससे हमारा फोकस '**होने**' (Being) की ओर शिफ्ट होता है, न कि सिर्फ '**पाने**' (Having) की ओर। हम उन गतिविधियों और संबंधों में अधिक अर्थ ढूंढ़ने लगते हैं जो हमारे वास्तविक स्व से जुड़े होते हैं।

---

6. व्यावहारिक अभ्यास: ध्यान और आत्म-परीक्षण में अद्वैत की क्या भूमिका है?

अद्वैत कोई सैद्धांतिक बहस नहीं है; यह एक **प्रत्यक्ष अनुभव** है। इसके ज्ञान तक पहुँचने के लिए यह केवल किताबी ज्ञान पर निर्भर नहीं करता, बल्कि निरंतर अभ्यास की माँग करता है।

6.1. आत्म-परीक्षण (Self-Inquiry - 'नित्य-अनित्य विवेक')

यह अद्वैत का सबसे सीधा मार्ग है, जिसे बाद में रमण महर्षि ने लोकप्रिय बनाया। इसमें स्वयं से बार-बार प्रश्न करना शामिल है: "**मैं कौन हूँ?**" (कोहम्?) ।

शरीर, मन, भावनाएँ, विचार ये सब बदलते रहते हैं। इन सबके पीछे जो 'मैं' का भाव स्थिर रहता है, उसकी खोज करना ही आत्म-परीक्षण है।

6.2. ध्यान (Meditation)

अद्वैत में ध्यान का लक्ष्य मन को शांत करके, उस पृष्ठभूमि की शांत चेतना को अनुभव करना है जो सदा विद्यमान है। यह '**साक्षी भाव**' विकसित करने में मदद करता है, यह देखना कि मैं विचारों और भावनाओं से अलग हूँ, उनका प्रेक्षक मात्र हूँ।

6.3. सर्वत्र ब्रह्म का दर्शन

दैनिक जीवन में, हर व्यक्ति, हर वस्तु, हर परिस्थिति में उस एक ही चेतना के दर्शन करने का अभ्यास। यह अभ्यास क्रोध, निर्णय और अलगाव की भावना को कम करता है।

---

7. आलोचनाएँ और चुनौतियाँ: क्या अद्वैत वेदांत दर्शन की कोई सीमाएं हैं?

7.1 द्वैत और विशिष्टाद्वैत दर्शन अद्वैत की किन बातों से असहमत हैं?

अद्वैत वेदांत हिंदू दर्शन का एकमात्र स्कूल नहीं है। **द्वैतवाद** (मध्वाचार्य द्वारा प्रतिपादित) और **विशिष्टाद्वैतवाद** (रामानुजाचार्य द्वारा प्रतिपादित) जैसी परंपराएँ अद्वैत के मुख्य सिद्धांतों से असहमत हैं।

7.1.1. द्वैतवाद की आलोचना

द्वैतवाद मानता है कि जीव (आत्मा), जगत (प्रकृति) और ईश्वर (ब्रह्म) – ये तीनों सदैव और सर्वदा अलग-अलग सत्ताएँ हैं। उनके अनुसार, अद्वैत का 'सब कुछ एक है' सिद्धांत भक्ति और सेवा भाव के लिए खतरा है। यदि सब कुछ एक है, तो भक्त और भगवान का प्यारा संबंध कैसे रह जाता है?

7.1.2. विशिष्टाद्वैतवाद की आलोचना

रामानुज मानते हैं कि जीव और ब्रह्म एक ही हैं, लेकिन पूरी तरह नहीं , जैसे अंग और अंगी (शरीर और आत्मा) का संबंध है। वे अद्वैत के '**मायावाद**' (जगत को मिथ्या मानने) को भी नहीं मानते। उनके लिए जगत और भक्ति का मार्ग भी वास्तविक और मुक्ति का साधन है।

7.1.3. व्यावहारिक कठिनाई

साधारण व्यक्ति के लिए यह समझना और अनुभव करना कि '**मैं ब्रह्म हूँ**' अत्यंत कठिन है। इसलिए, द्वैत और भक्ति के मार्ग को अधिक सुगम और भावनात्मक रूप से संतुष्टिदायक माना जाता है।

7.2 क्या अद्वैत जीवन की वास्तविकताओं से पलायन सिखाता है?

एक सामान्य आरोप यह लगता है कि अद्वैत 'जगत मिथ्या' कहकर दुख, गरीबी, अन्याय जैसी सामाजिक वास्तविकताओं से मुँह मोड़ने को प्रोत्साहित करता है। यह एक **गलतफहमी** है।

7.2.1. गीता का संदेश

अद्वैत के प्रमुख ग्रंथ भगवद्गीता में, श्रीकृष्ण अर्जुन से युद्ध के मैदान में डटकर खड़े रहने और अपना धर्म निभाने को कहते हैं। यह पलायन नहीं, बल्कि **कर्मयोग** है – बिना आसक्ति के कर्म करना।

7.2.2. संतों का जीवन

स्वामी विवेकानंद, जो अद्वैत के प्रचारक थे, ने '**दरिद्र नारायण की सेवा**' को ही ईश्वर की सच्ची सेवा बताया। वास्तविक ज्ञान प्राप्त व्यक्ति संसार से भागता नहीं, बल्कि उसे बदलने और सेवा करने की इच्छा से भर जाता है।

7.2.3. स्पष्ट दृष्टि

अद्वैत पलायन नहीं, बल्कि समस्याओं को देखने का एक **स्पष्ट दृष्टिकोण** देता है। जब हम स्वयं को और दूसरे को एक ही चेतना के रूप में देखते हैं, तो सेवा करना स्वाभाविक हो जाता है। भेद का भाव ही स्वार्थ और उपेक्षा का कारण बनता है।

---

8. अद्वैत वेदांत की आज के समय में प्रासंगिकता: हाल की घटनाओं के संदर्भ में

8.1 शंकराचार्य जयंती पर बढ़ी चर्चा से क्या संकेत मिलता है?

हाल ही में, आदि शंकराचार्य की जयंती पर सोशल मीडिया और सार्वजनिक मंचों पर उनके दर्शन पर चर्चा का एक नया उभार देखने को मिला। यह केवल एक रूढ़िवादी धार्मिक उत्सव नहीं था। इसे युवाओं और बुद्धिजीवियों के बीच एक **प्रासंगिक दार्शनिक चिंतन** के रूप में देखा गया। इससे कई संकेत मिलते हैं:

8.1.1. ज्ञान की पुनर्खोज

एक ऐसे युग में जहाँ सूचना की भरमार है लेकिन ज्ञान की कमी, लोग गहरे और तार्किक दार्शनिक प्रणालियों की ओर आकर्षित हो रहे हैं जो जीवन के मूलभूत प्रश्नों के उत्तर दे सकें।

8.1.2. सांस्कृतिक गर्व और पहचान

वैश्वीकरण के दौर में, युवा अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर एक स्थिर पहचान बनाना चाहते हैं। अद्वैत जैसा बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध दर्शन इसकी एक मजबूत नींव प्रदान करता है।

8.1.3. व्यावहारिक समाधान के रूप में

कोविड-19 महामारी के बाद के समय में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे बढ़े हैं। लोग अद्वैत की शिक्षाओं को तनाव प्रबंधन, चिंता कम करने और आंतरिक लचीलापन बनाने के **व्यावहारिक उपकरण** के रूप में देख रहे हैं।

8.2 वैश्विक संकटों के समय कैसे मदद कर सकता है अद्वैत दर्शन?

आज दुनिया जलवायु परिवर्तन, भू-राजनीतिक तनाव, आर्थिक असमानता और सामाजिक विखंडन जैसी जटिल चुनौतियों से घिरी हुई है। इन सबके मूल में 'अलगाव' और '*संकीर्ण स्वार्थ* की भावना काम कर रही है। अद्वैत की **एकत्व की दृष्टि** इन समस्याओं के समाधान के लिए एक आवश्यक बौद्धिक आधार प्रदान कर सकती है।

8.2.1. सामूहिक जिम्मेदारी

जब हम यह समझते हैं कि प्रकृति हमसे अलग नहीं है, बल्कि हम उसी का एक अंग हैं, तो पर्यावरण का शोषण करना स्वयं का शोषण करने जैसा लगने लगता है।

8.2.2. सहयोग पर जोर

'*सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट'* के बजाय, आधुनिक विज्ञान अब यह मान रहा है कि जीवन का विकास **सहयोग** से हुआ है। अद्वैत तो सदा से यही कहता आया है कि अस्तित्व का आधार एकता है, प्रतिस्पर्धा नहीं।

8.2.3. संघर्ष समाधान

राष्ट्रों और समुदायों के बीच टकराव अक्सर '*हमारा बनाम तुम्हारा* की सोच से पैदा होता है। एकत्व का दर्शन इस द्वैत को तोड़कर ऐसे समाधानों की ओर ले जा सकता है जहाँ सबका कल्याण निहित हो।

---

9. निष्कर्ष: क्यों जरूरी है आज अद्वैत का ज्ञान?

अद्वैत वेदांत कोई पुराना, धूल खाए हुए ग्रंथों में दबा हुआ दर्शन नहीं है। यह एक **जीवंत और गतिशील ज्ञान** है जो आज के हर संकट का सामना करने की क्षमता रखता है। यह हमें बाहरी दुनिया की उथल-पुथल से घबराए बिना, अपने भीतर एक अडिग केंद्र खोजने की शक्ति देता है।

यह हमें सिखाता है कि असली स्वतंत्रता किसी वस्तु या स्थिति को पाने में नहीं, बल्कि हर वस्तु और स्थिति में स्वयं को मुक्त देखने में है। तनावग्रस्त मानसिकता के इस युग में, अद्वैत एक **मानसिक स्वच्छता अभियान** की तरह है। यह हमारे मन से '*मैं* और '*मेरा* के अनावश्यक बोझ को हटाकर, उसे हल्का, प्रसन्न और रचनात्मक बनाता है।

Modern Significance of Advaita Vedanta, you can read in the blog post

अंततः, अद्वैत कोई नियमों का पुलिंदा नहीं है; यह **आत्म-जागरण** का एक निमंत्रण है। यह आपसे कहता है: "उस झूठे पहचान के आवरण को हटाओ, जो तुमने स्वयं पर चढ़ा रखा है, और अपने उस वास्तविक, दिव्य, असीम स्वरूप को देखो, जो तुम सदा से हो।"

---

10. अंतिम विचार

अद्वैत वेदांत कोई सपना नहीं है जो हमें वास्तविकता से दूर ले जाता है। बल्कि, यह वह जागरण है जो हमें वास्तविकता का सबसे गहरा, सबसे स्पष्ट और सबसे सुंदर रूप दिखाता है। यह हमें याद दिलाता है कि हमारी खोज दूर किसी पर्वत पर नहीं, बल्कि अपने ही हृदय के मौन में है। यह यात्रा बाहर नहीं, भीतर की ओर है।

---

11. कार्रवाई का आह्वान

इस ज्ञान को सिर्फ शब्दों में न पढ़ें। इसे अपने जीवन में एक प्रयोग के रूप में आजमाएँ। आज ही, कुछ मिनट शांति से बैठकर स्वयं से पूछें: "वह कौन है, जो इन सब विचारों को देख रहा है?" इस प्रश्न को अपने साथ रखें। अपनी दिनचर्या में, अपने रिश्तों में, अपनी चुनौतियों में इस एकत्व के दर्शन का एक छोटा सा बीज बोएँ। देखिए, कैसे यह धीरे-धीरे आपके जीवन को अधिक शांत, अधिक साहसी और अधिक प्रेम से भर देता है। आपका वास्तविक स्वरूप आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।